# Shri Kartika Damodara Stotram

# कार्तिक दामोदर स्तोत्रम्

## Document Information

Text title : Kartika Damodara Stotram

File name : kArtikadAmodarastotram.itx

Category : vishhnu, dashAvatAra, krishna

Location : doc_vishhnu

Transliterated by : Krishnananda Achar

Proofread by : Krishnananda Achar, NA

Description/comments : The stotra is recited in month of Kartik, being most auspicious monthe, hence the title.

Latest update : May 10, 2020

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 31, 2020

*sanskritdocuments.org*

# कार्तिक दामोदर स्तोत्रम्

। मत्स्यावतार, कूर्मावतार, वराहावतार ।

मत्स्याकृतिधरजय देवेश
वेदविबोधककूर्मस्वरूप ।
मन्दरगिरिधरसूकररूप
भूमिविधारक जय देवेश ॥ १॥

। नृसिंहावतार, वामनावतार, परशुरामावतार ।

काञ्चनलोचननरहरिरूप
दुष्टहिरण्यकभञ्जन जय भोः ।
जय जय वामन बलिविध्वंसिन्
दुष्टकुलान्तकभार्गवरूप ॥ २॥

। रामावतार, कृष्णावतार ।

जयविश्रवसः सुतविध्वंसिन्
जय कंसारे यदुकुलतिलक ।
जयवृन्दावनचर देवेश
देवकिनन्दन नन्दकुमार ॥ ३॥

। कृष्णावतार ।

जय गोवर्धनधर वत्सारे
धेनुकभञ्जन जय कंसारे ।
रुक्मिणिनायक जय गोविन्द
सत्यावल्लभ पाण्डवबन्धो ॥ ४॥

खगवरवाहन जय पीठारे
जय मुरभञ्जन पार्थसखे त्वम् ।
भौमविनाशक दुर्जनहारिन्
सज्जनपालक जय देवेश ॥ ५॥

शुभगुणपूरित जय विश्वेश
    जय पुरुषोत्तम नित्यविबोध ।
भूमिभरान्तककारणरूप
    जय खरभञ्जन देववरेण्य ॥ ६॥

विधिभवमुखसुरसततसुवन्दित
    सच्चरणाम्भुज कञ्जसुनेत्र ।
सकलसुरासुरनिग्रहकारिन्
    पूतनिमारण जय देवेश ॥ ७॥

यद्भ्रूविभ्रममात्रात्तदिदं
    आकमलासनशम्भुविपाद्यम् ।
सृष्टिस्थितिलयमृच्चति सर्वं
    स्थिरचरवल्लभ स त्वं जय भो ॥ ८॥

जय यमलार्जुनभञ्जनमूर्ते
    गोपीकुचकुङ्कुमाङ्कितागङ्ग ।
पाञ्चालीपरिपालन जय भो
    जय गोपीजनरञ्जन जय भो ॥ ९॥

जय रासोत्सवरत लक्ष्मीश
    सततसुखार्णव जय कञ्जाक्ष ।
जय जननीकरपाशसुबद्ध
    हरणान्नवनीतस्य सुरेश ॥ १०॥

बालक्रीडानपर जय भो त्वं
    मुनिवरवन्दितपदपद्मेश ॥

कालियफणिफणमर्दन जय भो
    द्विजपत्न्यर्पितमत्सिविभोन्नम् ॥ ११॥

। बुद्धावतार, कल्क्यावतार ।
क्षीराम्बुजिकृतनिलयन देव
    वरद महाबल जय जय कान्त ।
दुर्जनमोहक बुद्धस्वरूप
    सज्जनबोधक कल्किस्वरूप ॥ १२॥

जय युगकृत् दुर्जन विध्वंसिन् ।
जय जय जय भोः जय विश्वात्मन् ॥ १३॥

इति मन्त्रं पठन्नेव कुर्यान्नीराजनं बुधः ।
घटिकाद्वयशिष्टायां स्नानं कुर्याद्यथाविधि ॥ १४॥

अन्यथा नरकं याति यावदिन्द्राश्चतुर्दश ।

इति श्री पञ्चरात्रगमे हंसब्रह्म संवादे श्रीकार्तिकदामोदरस्तोत्रम् ॥

This dashAvatAra stotra is chanted in the month of Kartika.

Encoded and proofread by Krishnananda Achar

*Shri Kartika Damodara Stotram*

pdf was typeset on May 31, 2020

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*